Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जन्मपूर्व के मालवी एवं मेवाडी संस्कार गीतों का तुलनात्मक अध्ययन

भरत कुमार तिवारी *

* शोधार्थी, हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्याल, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – हमारे जीवन में सोलह संस्कारों का बड़ा महत्व है। प्रत्येक संस्कार का अपना उद्देश्य है। मन और बुद्धि के चहुँमुखी विकास, अनुशासन, व्यवहार व संयम को प्रोत्साहित करते है ये संस्कार।

संस्कारों की संख्या को लेकर विद्धानों में कुछ मत विभिन्नताएँ भी है। गौतम स्मृति में 48 संस्कार बताए गए है। महर्षि अंगिरा ने 25 संस्कार स्पष्ट किये है। पुराणों में भी विविध संस्कारों का उल्लेख है परंतु इनमें मुख्य तथा आवश्यक 16 संस्कार माने गए है।

संस्कार का वर्गीकरण :–भारतीय समाज में संस्कारों का बहुत ही अधिक महत्व है। प्राचीनकाल में भारतीय जीवन का सर्वांगीण विकास तथा नि:श्रेयस मूल संस्कारों में ही निहित था। जब तक मनुष्य जीवित रहे, वह सर्वांगीण उन्नति करता रहे और मरणोपरांत स्वर्ग या मोक्ष की प्राप्ति करे। अत: जीवन के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था की गई। संस्कार का अर्थ है– वह प्रक्रिया जिसके किए जाने पर पदार्थ किसी कार्य के लिए उपयोगी बन जाता है। अर्थात् किसी वस्तु में योग्यता का आधान करने वाली क्रियाओं को संस्कार कहा जाता है। गुणांतराधान अर्थात् किसी वस्तु के अन्य गुणों का आधान करना संस्कार है।

हमारे ऋषि–मुनियों ने संस्कारों के माध्यम से जीवन के प्रत्येक अंगों को गुणों से भरने एवं विकसित कर पोषित करने का सद्प्रयास किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने संस्कारों को धार्मिक रूप दिया और उपनिषदों, सूत्रग्रंथों एवं स्मृतियों में इनके पूर्ण और व्यवस्थित रूप का वर्णन किया है। आर्य ऋषियों ने मनुष्यों के जीवन में गुणों का आधान करने की योजना बनाई एवं आयु के अनुरूप विभिन्न संस्कारों की व्याख्या की। मानव–जीवन गर्भाधान से ही प्रारम्भ हो जाता है और मुक्तिधाम में ही उसको सद्गति प्राप्त होती है। इसलिए मानव शरीर को स्वस्थ एवं मन को शुद्ध तथा अच्छे संस्कारों वाला बनाने के लिए गर्भाधान से लगाकर अंत्येष्टि तक सोलह संस्कार स्वीकार किए गए हैं। जो गृह–सूत्रों के अनुसार इस प्रकार हैं– गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, केशांत, समावर्तन, विवाह और अंत्येष्टि।

संस्कार गीत :–संस्कारों की सम्पन्नता के अवसर पर अनेक धार्मिक कर्म सपांदित किए जाते हैं जिन्हें लोकाचार की संज्ञा दी गई है। प्रत्येक लोकाचार के अवसर पर परिवार और समाज का महिला वर्ग अपने आंतरिक उल्लास को व्यक्त करते हुए जिन गीतों को गाता है वे संस्कार गीत कहलाते हैं, जैसे पुत्र के जन्म के समय गाए जाने वाले गीत वे 'सोहर' कहलाते हैं। चूँकि संस्कार मंगलमय आनुष्ठानिक क्रिया हैऔर संस्कार गीत उस मंगल क्रिया की मांगलिकता को व्यक्त करने वाले। अत: दोनों ही मंगल भावापन्न हैं।

'लोकसाहित्य के अमर वैतालिक सांस्कृतिक समता की घोषणा, मानवीय शाश्वत भावनाओं की आदिम अभिव्यक्ति के रूप में करते ही रहे हैं और कहते हैं कि हम सब प्रकृतित: एक है।'[1] अत: संस्कारों का पूरे विश्व के मानव–जीवन में महत्तव निर्विवाद है। भारतीय जीवन तो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारों से गुँथा हुआ है। हिन्दू धर्मशास्त्रों ने ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य (द्विजन्मा) को इहलोक तथा परलोक में पावन करने वाला गर्भाधानादि (षोडश) शरीर–संस्कार वेद विहित पवित्र कर्मो द्वारा करने के योग्य माना है। इन्हीं संस्कारों की सम्पन्नता के समय जो गीत गाये जाते हैं, वे संस्कार गीत कहलाते हैं।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक जो विभिन्न संस्कार किए जाते हैं, उनसे सम्बन्धित गीत संस्कार विषयक होते हैं। अन्य जातियों की अपेक्षा हिंदू जाति संस्कार प्रधान है। संस्कारों को अपूर्ण छोड़ना धर्म विरूद्ध माना गया है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए संस्कारों को निर्दिष्ट विधि–विधान से पूरा किया जाना चाहिए।

इस प्रकार संस्कारों का जो सुचिन्तित उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में भारतीय मेधा ने किया है उसमें लोक प्रचलित व्यवहारों का व्यवस्थित और शास्त्रीय विवेचन प्राप्त होता है। पं. शिवसहाय चतुर्वेदी ने तो घर–घर होने वाले संस्कारों की समष्टि को ही पारिवारिक संस्कृति कहा है।'संस्कार' संस्कार–गीतों' की 'विराट भैरवी के आनन्द रस से सिंचित होकर लोकमानस को विश्रान्ति प्रदान करते हैं।'

जन्म से पूर्व के संस्कार :–यहाँ जन्म से पूर्व के संस्कारों गर्भाधान, पुंसवन और सीमंतोन्नयन का उल्लेख एवं उनसे सम्बन्धित मालवी एवं मेवाड़ी संस्कार गीतों का वर्णन किया गया है जो इस प्रकार है –

1. **गर्भाधान संस्कार :–**जीवन का प्रारम्भ इसी संस्कार से होता है। गर्भाधान एक सहज नैसर्गिक प्रक्रिया है। इस प्राकृतिक क्रिया को अधिक परिणाम कारक बनाने वाली विधि का नाम है, गर्भाधान संस्कार।

भारतीय समाज में गृहस्थ अवस्था में प्रवेश करने के पश्चात दम्पत्ति युगल को संतान उत्पन्न करने की मान्यता दी गई है। गर्भाधान की क्रिया के समय स्त्री–पुरूष की शारिरीक तथा मानसिक स्थिति जैसी शुद्ध और पवित्र होगी, बालक का शरीर और मन भी वैसा ही बनेगा। यह उसी पवित्रता से होना चाहिये जैसे व्यक्ति मंदिर में प्रवेश करता है।

तात्पर्य यह है कि वंश वृद्धि और पितृ–ऋण से मुक्ति की इच्छा गर्भाधान

संस्कार का मुख्य उद्देश्य है। शास्त्रों में गर्भधारण का उत्तम समय भी निश्चित किया गया है जिसका उपयोग कर यशस्वी, तेजस्वी, ओजस्वी संतान प्राप्त की जा सकती है।

गर्भधारण संबंधी मालवी गीत –

तिथि गरभ धारण की,
होवे अनुकूल, न होवे कोय भूल।
मन खुशी, मन पावन होय,
सुत जनमें ऐसा तारे कुल।
जनक बणो जी राज,
हमारे संत हो संत समाज
जननी धीर धरो।
माता सुत हो धीरज मान राखे,
मर्यादा राखे कुल कुमार।
करो गरभ धारण,
संतान कुल माय ऐसी हो राज।
करे कुल को उद्धार,
वंश तपे सूरज–सा जी राज।

उपर्युक्त गीत में गर्भधारण की तिथि अनुकूल होने का वर्णन किया है अर्थात् इस महत्वपूर्ण अवसर पर जो तिथि बताई गई है उसी में गर्भधारण करना चाहिए कोई भूल नहीं होनी चाहिए। गर्भधारण करते समय मन में खुशी और मन पावन होना चाहिए तभी घर में ऐसी संतान जन्म लेगी जो प्रतिष्ठा पाएगी व कुल का उद्धार करेगी। माता – पिता को धीरज धारण कर, मर्यादित व संयंमित जीवन शैली अपनानी चाहिए। राजा जनम जैसा आचरण करना चाहिए ताकि संत समाज सभी प्रसन्न होवे। जिससे कि उत्तम संतान का जन्म हो जो सूर्य की भाँति स्वयं भी प्रकाशित हो और समस्त वंश को गौरव प्रदान करें।

गर्भधारण संबंधी मेवाड़ी गीत –

मालीका रे खिड़की खोल भँवर ऊभा बारणो।
आओ कवरां बैठो नी पास, काई तो कारण आया ?
म्हारी धण ने पैलो जी मास नारंगी में मन गयो जी।
नारीं रा लागै छै हजार, कलियाँ रा पूरा डोड़ से जी।
नारंगी रा दांता हजार, कलियारां पूरा डोड से जी।
पैली खाई खाटीं लागी, दूजी खट–मीठी लागी।
तीजी ने बींदड़ राजा जनम लियो।
म्हारी धण ने दूजो जी मास, नारंगी में मन गयो,
म्हारी धण ने तीजो जी मास, नारंगी में मन गयो,
म्हारी धण ने चौथो जी मास, नारंगी में मन गयो,
म्हारी धण ने पाँचवों जी मास, नारंगी में मन गयो,
म्हारी धण ने छठों जी मास, नारंगी में मन गयो,
म्हारी धण ने सातवों जी मास, नारंगी में मन गयो,
म्हारी धण ने आठवों जी मास, नारंगी में मन गयो,
म्हारी धण ने पूरा जी मास, नारंगी में मन रह्यो।

प्रस्तुत गीत में मालण अपने लड़के से कहती है कि भँवर जी बाहर खड़े हैं, जाकर खिड़की खोलो। मालव भँवर जी को पास बुलाकर कहती है कि आओ कुँवर जी पास बैठो, किस कारण आपका आना हुआ है ? कुँवर जी कहते हैं कि हमारी स्त्री को पहला महीना है और उसका मन नारंगी में लगा है। मालण अवसर देखकर भँवर जी से नारंगी के हजार और कली के पूरे डेढ़ सौ रूपये माँगती है। कुँवर जी कहते हैं कि नारंगी के पूरे हजार और कली के पूरे डेढ़ सौ रूपये देंगे। पहली खाई तो खट्टी लगी और दूसरी खाई तो खट–मीठी लगी। तीसरी में बींदड़ राजा ने जन्म लिया। मेरी स्त्री को दूसरा महीना लगा है और उसका मन नारंगी में गया है। इसी प्रकार तीसरा, चौथा, पाँचवां, छठा, सातवां, आठवां और पूरे नौ महीने हो गए हैं और उसका मन नारंगी में ही रह गया है।

2. पुंसवन संस्कार :– पुंसा का अर्थ पुमान अर्थात पौरूष माना है। गर्भ के सुनिश्चित होने पर शिशु के श्रेष्ठ बौद्धिक और मानसिक विकास के लिए यह संस्कार किया जाता है। पुंसवन संस्कार से स्वस्थ, सुन्दर और गुणवान संतान की प्राप्ति होती है। शारीरिक विज्ञान के अनुसार तीसरे और चौथे माह के मध्य में गर्भस्थ शिशु के अंगो का बनना प्रारंभ होता है अत: यह संस्कार तीसरे माह के प्रारंभ में किया जाता है।

माता को मानसिक रूप से ओज व तेजयुक्त संतान की उत्पत्ति के लिए प्रेरित करना इस संस्कार का हेतु हे। समाज एवं परिवार को गर्भ धारण की स्वाभाविक सूचना तथा गर्भवती स्त्री की विशेष चिकित्सा एवं देखभाल के लिए परिवार के सदस्यों को दायित्व बोध कराना भी इस संस्कार का उद्देश्य है।

संस्कार के दौरान पति–पत्नी को गृहदेव का पूजन करना होता है। इस संस्कार के बाद गर्भवती स्त्री को अपने रहन–सहन, खान–पान, पठन–पाठन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है, क्योंकि उसका सीधा प्रभाव आने वाले गर्भ पर पड़ता है।

पुंसवन संबंधी मालवी गीत –

बालक जनमें राम हो, राम हो।
कौशल्या माय हरख नी माय
गरभ में सुणजो, गरभ में सुणजो
बालक जनमें राम हो, राम हो।
राम जनमें कुल उजियारो, कुल उजियारो
बालक जनमें राम हो, राम हो।

उपर्युक्त गीत में गर्भिणी स्त्री गर्भ में पल रहे शिशु से बात करती हुई कहती है कि मेरे घर भी राम का जन्म हो, मुझे भी कौशल्या माता जैसा आनन्द प्राप्त हो, मेरी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं हो, मैं फूले ना समाऊँ। हे मेरे पुत्र जिस प्रकार राम के जन्म लेने से कुल में उजाला हुआ, कुल का नाम रोशन हुआ ठीक उसी प्रकार तेरे जन्म लेने से भी कुल प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा अत: तुम भी मेरे घर राम बनकर ही आना।

पुंसवन संबंधी मेवाड़ी गीत –

भैरू जी काठे रे गँवा री चोढूँ लापसी, माँय तो गायाँ रो देसी घी।
कासी रा बासी एक तो अरज म्हारी हेलो हुणजो।
भैरू जी देराण्याँ–जेठाण्याँ मनें मोसो बोलियो,
देराण्याँ–जेठाण्याँ हींडै पालणो।
भैरू जी हूँ एक पुतर बिन कुल में बाँझड़ी।। कासी रा बासी
भैरू जी कदेय न भीजी म्हारी दूधाँ काँचली,
भैरू जी कदेय न भीज्यो म्हारो काँधों लाल सूँ।
कासी रा बासी, एक पुतर बिन कुल में बाँझड़ी।
भैरू जी सास सपूती, बीं रे देवरियो लाडलो।
भैरू जी नणदल ऊँनाले री बलती ए लाय। कासी रा बासी।
भैरू जी कासी में बाजै थारे घूघरा, कोडाणों में नगर निसाण।

भैरू जी पीवरिये रे धसूँ देवलो, आवती-जावती थाँने धोकस्यूँ।
भैरू जी एक-एक तो अरज म्हारी हेलो हुणजो।

प्रस्तुत गीत में गर्भिणी भैरू जी से विनती करती हुई कहती है कि हे भैरव, मैं काठे (मरूभूमि में पैदा हुए) गेहूँओं की लापसी चढ़ाऊँगी। उसमें गाय का घी डालूँगी। हे काशी के वासी, एक अरज मेरी भी सुनो। देवरानी, जेठानी ने मुझे ताना मारा है। उनके तो पलने में पुत्र झूल रहे हैं, मैं अभागिनी कुल भर में एक ही बाँझ हूँ।

हे भैरवनाथ, स्तन के दूध से मेरी काँचली (आँचल) कभी नहीं भीगी, न मेरा कंधा भीगा कभी प्यारे पुत्र के मुख से टपकी हुई लार से। हे काशी के वासी, मैं अभागिनी कुल भर में अकेली निपूत बाँझ हूँ। मेरी सास सुपुत्रवती है, उसके लाड़ला देवर पुत्र है और ग्रीष्म की तीव्र आग की तरह जलती भुनती मेरी ननन्द उसकी पुत्री है। ये दोनों मुझे ताना मारते हैं। व्यंग्य कसते हैं।

हे देव, काशी में आपके नाचते समय के घुँघरू बजते हैं और कोडमदेसर में आपके निसान धहराते हैं। हे नाथ मैं पीहर में आपका मंदिर बनवाऊँगी और आते-जाते हर समय आपका वंदन करूँगी। केवल एक ये प्रार्थना मेरी सुन लीजिए।

3. सीमंतोन्नयन संस्कार :- इसका शाब्दिक अर्थ है केश का उन्नयन अर्थात् ऊपर उठाना। यह संस्कार शिशु की गर्भावस्था के छठे माह में किया जाता है। यह वह समय होता है जब गर्भ साधारण अवस्था से हाथ, पाँव, आँख, कान तथा हृदय वाले शिशु के रूप में विकसित हो रहा होता है।

इस संस्कार का उद्देश्य गर्भवती स्त्री को मानसिक बल तथा उसके आहार में पौष्टिकता की ओर परिवार का ध्यान आकर्षित करना है। संस्कार के समय पति अपनी पत्नी के केशों को संवारते हुए ऊपर की ओर उठाता है जो उसके साथ आत्मीयता व स्नेह युक्त व्यवहार का प्रतीक है।

संस्कार के समय घर पर उपस्थित महिलाये गर्भवती माता के कान में 'ओजस्वी', वीर, शील-समपन्न संतान की माता हो, ऐसे सुवचन भी कहती है। इसके बाद गर्भवती स्त्री को अन्य महिलाओं के द्वारा खिचड़ी खिलाई जाती है जो पौष्टिक आहार देने का सूचक है।

सीमंतोन्नयन संबंधी मालवी गीत -

धन ने माथे मोड़ी ने ओड़ी घांटड़ी जी
धन तो जइ बेठा सुसराजी की गोद
अवसर मूंगा.....
सुसरा जी अगरणी करया,
ओ बिना नइं तरे यो तो अवसर चूक्यो नी जाय
अवसर मूंगा.....
बउ के माथे मोड़ी ओ ओड़ी
घांटड़ी बउबड़ जइ बेठा जेठ जी री गोद
अवसर मूंगा.....
जेठ जी घेवर बटाया बिना
नी सरे यो तो अवसर चूक्यो नी जाय
अवसर मूंगा.....
बउ ने माथे मोड़ी ओ ओड़ी
चुनड़ी देवर पील्यो रंगाया बिना नई सरे
देवर बाजाओ बजाया बिना नई सरे,
यो तो अवसर चूक्यो जाय
अवसर मूंगा.....
बउ के माथे मोड़ी ने ओड़ी घांटड़ी,
बउवड़ बेठा बाइजी री गोद
अवसर मूंगा.....
बइसा साद पुराया बिना नी सरे
बइसा अवसर चूक्यो नी जाय
अवसर मूंगा.....

उपर्युक्त गीत में नायिका अपने नायक से कहती है कि मुझसे ब्याह रचाने के लिए पिया जी आप ही सिर पर मौर बाँधकर आये और मैंने भी आपकी ही लाई हुई घाटड़ी (चुन्नी) पहनी, अब गोद भराई का अवसर आया है। गोद भराये बगैर नहीं चलेगा। चुन्नी पहनकर बहू जेठ जी की गोद में जा बैठी। जेठ जी से कहा - जेठ जी अब घेवर बटाएँ बगैर काम नहीं चलेगा। वह देवर जी से कह रही है - देवर जी आप मुझे पीली चुन्नी लाकर दो, उसके बिना काम नहीं चलेगा। देवर जी बाजे बजवाओ, बिना बाजे बजवाए काम नहीं चलेगा। बहू ने चुनरी पहनी और सास की गोद में जाकर बैठ गई और कहा - सासू जी अब आप मेरी गोद भराई रस्म पूरी कीजिए। इसके बाद बहू अपनी ननन्द से कहती है कि बाईसा इस रस्म के बिना काम नहीं चलेगा, यह अवसर बहुत ही मूल्यवान है इसे चूकना नहीं है।

सीमंतोन्नयन संबंधी मेवाड़ी गीत -

थेइज ओ केसरिया सायब गांव सिधाया ओलगणा,
सिधाया ओ अजमौ कुण मोलावे ओ राज।
थेइज ओ मांनेतण रांणी हालरियो जिणजौ,
थेनड़ियो जिणजौ ओ अजमो म्हारा भावोसा मोलावो ओ राज

प्रस्तुत गीत में गर्भवती स्त्री का पति परदेश जा रहा है। पति की अनुपस्थिति में अजवाईन की व्यवस्था कौन करेगा? गर्भावस्था के आठवें मास में स्त्रियाँ 'अजमी' गाती हुई कहती है कि ओ केसरिया प्रियतम! आप दूसरे गाँव जा रहे हो। ओ राज, अब अजवायन कौन खरीदेगा? ओ मानेती रानी! तुम पुत्र उत्पन्न करना, अजवायन मेरे बाबोसा खरीद कर ले आएँगे।

निष्कर्ष -इस प्रकार हमारे संस्कार हमें मानव कोटि से बहुत ऊँचाई पर ले जाकर देवत्व तक पहुँचाने में समर्थ है। अत: यह कहना समुचित है कि संस्कारों की योजना व्यक्ति को नियमबद्ध एवं संयमित जीवन जीना सिखाती है। हमारे ये संस्कार पारिवारिक और सामाजिक स्वास्थ्य का समन्वय है। ये संस्कार मूलत: वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित है। संस्कारों की अनुपालना से समाज और राष्ट्र की नैतिक उन्नति हो, सफलता प्राप्त हो यही इनके मूल में छिपा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. लोकायन की भूमिका, पृ. ग, डॉ. देवराज उपाध्याय
2. मनुस्मृति, - 2/27
3. संस्कार विशेषांक पत्रिका
4. आश्वलायन, वी.मि.सं., भाग-1
5. वीर मित्रोदय, संस्कार भाग - 1, पृ. - 168
6. षोडश संस्कार विवेचन, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ. 36, 51-52
7. मालवी संस्कृति एवं उसका साहित्य - डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित
8. मालवी संस्कार गीत - श्रीमती निर्मला राजपुरोहित
9. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा - डॉ. जयसिंह नीरज
10. राजस्थान के लोकगीत - श्रीमती स्वर्णलता
11. राजस्थान का लोकसंगीत - डॉ. योजना शर्मा